संशोधित पाठ्यक्रम

बी. ए. भाग–3

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र

जनपदीय भाषा– साहित्य (छत्तीसगढ़ी)

प्रस्तावना–

हिन्दी केवल खड़ी बोली नहीं है, बल्कि एक बहुत बड़ा भाषिक समूह है। हिन्दी जगत में अनेक विभाषाएं, बोलियाँ और उपबोलियाँ विद्यमान हैं जिनमें सकल साहित्य सम्पदा है। इनके सम्यक अध्ययन और अन्वेषण की आवश्यकता है। जनपदीय भाषा छत्तीसगढ़ी निरन्तर विकास की ओर अग्रसर हो रही है अस्तु, इस भाषा का और इसमें रचित साहित्य का इतिहास– विकास स्पष्ट करते हुए इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनुशीलन करना हिन्दी के वृहत्तर हित में होगा। छत्तीसगढ़ी भाषा का पाठ्यक्रम निम्न बिन्दुओं पर आधारित हैं–

(क) छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास– विकास

(ख) छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित साहित्य का इतिहास

(ग) छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रमुख प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन।

पाठ्य विषय–

रचनाएँ–

(1) प्राचीन कवि संत धर्मदास के 3 पद

1. गुरू पइंया लागों नाम लखा दीजो हो।
2. नैना आगे ख्याल घनेरा।
3. भजन करौ भाई रे, अइसन तन पाय के।

(सन्दर्भ– धर्मदास के शब्दावली से उद्घृत)

(2) लखनलाल गुप्त का गद्य–

1. सोनपान

(गद्य– पुस्तक' सोनपान' के उद्घृत)

(3) अर्वाचीन रचनाकार

डॉ. सत्यभामा आडिल रचित गद्य

1. सीख सीख के गोठ

(गद्य पुस्तक 'गोठ' के उद्घुत)

(4) डॉ. विनय पाठक की कविताएँ–

1. तँय उठथस सुरूज उथे
2. एक किसिम के नियाव

('अकादसी और अनचिन्हार' पुस्तक से उद्घृत)

(5) मुकुन्द कौशल– छत्तीसगढ़ी गजल

''छै बित्ता के मनखे देखों........ से– मछरी मन लाख लेथे'' तक

(पुस्तक' छत्तीसगढ़ी गजल' के पृष्ठ 17 से उद्घृत)

द्रुतपाठ के रचनाकार– (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

1. सुन्दर लाल शर्मा
2. कपिलनाथ कश्यप
3. रामचन्द्र देशमुख (रंगकर्मी)

अंक विभाजन–	व्याख्याएं (3)	–	21 अंक
	आलोचनात्मक प्रश्न (2)	–	24 अंक
	लघुउत्तरीय प्रश्न (5)	–	15 अंक
	वस्तुनिष्ठ (15)	–	15 अंक
	कुल अंक		**75 अंक**

इकाई विभाजन

इकाई एक	–	व्याख्या
इकाई दो	–	प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकार
इकाई तीन	–	(अ) छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास
		(ब) छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास
इकाई चार	–	द्रुत पाठ के तीन रचनाकार
इकाई पाँच	–	वस्तुनिष्ठ / (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संशोधित पाठ्यक्रम

बी.ए. भाग– 3

द्वितीय प्रश्न पत्र

हिन्दी भाषा– साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग विवेचन

प्रस्तावना–

हिन्दी भाषा का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही गुढ़– गहन भी। इसमें रचित साहित्य ने लगभग डेढ़ हजार वर्षो का इतिहास पूरा कर लिया है इसलिए हिन्दी भाषा और साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन की बड़ी आवश्यकता है। इसी के साथ– साथ हिन्दी ने अपना जो स्वतंत्र साहित्य शास्त्र निर्मित किया हैं, उसे भी रूपायित करने की आवश्यकता है। इसके संज्ञान द्वारा विद्यार्थी की मर्मग्राहिणी प्रतिभा का विकास होगा और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शुद्ध साहित्यिक विवेक का सन्निवेश होगा।

पाठ्य विषय–

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप विकास– हिन्दी की उत्पत्ति, हिन्दी की मूल आकर भाषाएँ तथा विभिन्न विभाषाओं का विकास। हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप–

1. बोलचाल की भाषा
2. रचनात्मक भाषा
3. राष्ट्रभाषा
4. राजभाषा
5. सम्पर्क भाषा
6. संचार भाषा

हिन्दी का शब्द भण्डार– तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्दावली।

(ख) हिन्दी साहित्य का इतिहास :– आदिकाल, पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल और आधुनिक काल की सामाजिक , सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख युग प्रवृत्तियाँ, विशिष्ट रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि कृतियाँ, साहित्यिक विशेषताएँ।

(ग) काव्यांग – काव्य का स्वरूप एवं प्रयोजन।
रस के विभिन्न भेद, विभिन्न अंग, विभावादि तथा उदाहरण।

प्रमुख 5 छंद – दोहा, सोरठा, चौपाई, कुण्डलियाँ, सवैया।

शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुररूक्ति प्रकाश।

अर्थालंकार – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, भ्रांतिमान।

संदर्भ ग्रन्थ–

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास संपादक– डॉ. सुशील त्रिवेदी व बाबूलाल शुक्ल (प्रकाशक– म. प्र. उ. शि. अनुदान आयोग)

(2) राजभाषा हिन्दी– मलिक मोहम्मद (प्रभात प्रकाशन दिल्ली)

(3) हिन्दी भाषा– डॉ. भोलानाथ तिवारी।

अंक विभाजन–

आलोचनात्मक (4)	–	44 अंक
लघुउत्तरीय प्रश्न (4)	–	16 अंक
वस्तुनिष्ठ प्रश्न (15)	–	15 अंक
		कुल अंक– 75 अंक

इकाई विभाजन–

इकाई–1	हिन्दी भाषा का स्वरूप– विकास– (खण्ड– 'क')
इकाई–2	हिन्दी का शब्द भण्डार– (खण्ड 'क' का अंतिम भाग)
इकाई–3	हिन्दी साहित्य का इतिहास– (खण्ड– ख)
इकाई–4	काव्यांग– रस, छंद, अंलकार (भाग– ग)
इकाई–5	लघुउत्तरीय एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)